

Padma Shri



SHRI KHALIL DHANTEJVI (POSTHUMOUS)

Shri Khalil Dhantejvi, born as Ibrahim Makarani was the most loved and revered name for championing the ascent of Gujarati language in the glorious Ghazal Literature of India. His works had not only transcended the literary standards, the etymology and the colloquial use, but had reached the populous, being palatable, rich with relatable experiences. Much of the his influence had been derived from his modest but proud identity of being a farmer, from the little village of Dhantej near the then Baroda State. Among many, his penned lines(In Hindi)

Ab mein raashan ki kataaro mein nazar aata hoon,
Apne kheto se bichadne ki sazaa paata boon.

Struck a chord with the nation's literary circle for bringing the irony of our Annadaata's plight and jeopardy in that regime.

2. Born on 12th December, 1938, Shri Dhantejvi made the most of his village school teachings of grade 4, moved to Vadodara city for trying his hand as a journalist in his youth. Though a late starter, but an exceptionally bright observer and self-learner in language, he progressed very quickly to film journalism. Soon enough he penned Stories, Dramas, Scripts and Films, winning 8 awards for "Chhutaa Chhedaa" film by the Government of Gujarat as the Writer, Director Khalil. While his books and films brought him an entry to a career, his true love remained Gujarati and Urdu poetry. Smiling back what life offers, his ghazals echo his Self-esteem, acknowledgement of pathos and moving past the limitations. His baritone recitals, relatable ironies delivered with equal finesses in Gujarati and Urdu have been pivotal in bringing newer audience to Ghazal universe, while being connected to at least four literary generations of Gujarat.

3. The most prestigious awards Vali Gujarati Ghazal Award (named after Baba-e-Rekhta Vali Dakhni) and Narsinh Mehta Award (named after Aadya Kavi of Gujarati, Narsinh Mehta) were conferred upon Shri Dhantejvi in 2013 and 2019. The Indian National Theatre (INT) Mumbai had also recognized his outstanding work in Ghazal by conferring The Kalapi Award upon him in year 2004.

4. With 25 novels, 10 Gazal Sangrah, 8 Films, a biography, and countless Mushaayraas, "Khalil" as lovingly called by his readers shall remain etched in this nation's cultural memory for the generations looking for Gravitas and Inspiration in Adversity.

5. Shri Dhantejvi passed away on 4th April, 2021.

पद्म श्री



श्री खलील धनतेजवी (मरणोपरांत)

श्री खलील धनतेजवी का पूर्वनाम इब्राहिम मकरानी था। उनको भारत के गौरवशाली ग़ज़ल साहित्य में गुजराती भाषा को ऊंचा स्थान दिलाने के लिए बहुत प्रेम और सम्मान दिया जाता है। उनकी रचनाएं न केवल साहित्यिक मानकों, व्युत्पत्ति और बोलचाल के उपयोग को चरम सीमा तक लेकर गई हैं, बल्कि अपने माधुर्य और सरलतापूर्ण सम्पन्नता के कारण अत्यधिक लोकप्रिय हैं। तत्कालीन बड़ौदा रियासत के निकट धनतेज के छोटे से गाँव से आने वाले श्री धनतेजवी पर उनकी किसान होने की साधारण किंतु गौरवमयी पृष्ठभूमि का प्रभाव रहा है। इनकी लिखी कई कविताओं में से, निम्नलिखित पंक्तियों (हिंदी में)

अब मैं राशन की कतारों में नज़र आता हूँ,

अपने खेतों से बिछड़ने की सजा पाता हूँ।

ने हमारे अन्नदाता की दुर्दशा और संकट की विडंबना को तत्कालीन शासन के समक्ष रखने के कारण देश के साहित्यिक फलक पर अपना स्थान बनाया।

2. 12 दिसंबर, 1938 को जन्मे, श्री धनतेजवी ने अपने गाँव के स्कूल से कक्षा 4 तक की शिक्षा ली और इसका इष्टतम लाभ उठाते हुए, युवावस्था में पत्रकार के रूप में कार्य करने के लिए वडोदरा शहर चले गए। यद्यपि, उन्होंने देर से शुरुआत की, किंतु एक असाधारण और कुषाग्र दृष्टि के धनी होने के कारण और भाषा को स्वयं ही सीखने की ललक के कारण इन्होंने फिल्म पत्रकारिता में बहुत तेजी से प्रगति की। जल्द ही उन्होंने कहानियाँ, नाटक, स्क्रिप्ट और फिल्में लिखीं और लेखक, निर्देशक खलील के रूप में "छुटा छेड़ा" फिल्म के लिए गुजरात सरकार से 8 पुरस्कार जीते। एक ओर जहाँ इनकी किताबों और फिल्मों से इनको एक करियर मिला, वहीं दूसरी ओर गुजराती और उर्दू काव्य उनका सच्चा प्यार बना रहा। जीवन में जो कुछ भी मिला उसे सहर्ष स्वीकार करते हुए, उन्होंने अपनी गज़लों में अपने आत्मसम्मान, करुणा और बेड़ियों को तोड़ने की इच्छा को जाहिर किया। गुजराती और उर्दू में समान कुशलता के साथ प्रस्तुत किये गये उनके मध्यम आवाज के गायन और श्रोताओं के मन को छू जाने वाली उनकी रचनाओं ने कम से कम चार साहित्यिक पीढ़ियों को बांधे रखा और नए श्रोताओं को ग़ज़ल की दुनिया की ओर आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

3. श्री धनतेजवी को वर्ष 2013 में सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार 'वली गुजराती ग़ज़ल पुरस्कार' (बाबा-ए-रेखता वली दखनी के नाम पर) और वर्ष 2019 में 'नरसिंह मेहता पुरस्कार' (गुजराती के आद्य कवि, नरसिंह मेहता के नाम पर) से सम्मानित किया गया। भारतीय राष्ट्रीय रंगमंच (आईएनटी) मुंबई ने भी ग़ज़ल के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए वर्ष 2004 में उन्हें कालापी पुरस्कार से सम्मानित किया।

4. 25 उपन्यासों, 10 ग़ज़ल संग्रहों, 8 फिल्मों, एक जीवनी और अनगिनत मुशायरों के रचनाकार, अपने पाठकों के प्यारे "खलील", इस देश की सांस्कृतिक स्मृति में अंकित रहेंगे और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रेरणा और प्रोत्साहन का स्रोत बने रहेंगे।

5. श्री धनतेजवी का 4 अप्रैल, 2021 को देहावसान हो गया।